2016

HINDI

(Modern Indian Language)

(Hindi Kavyadhara)

Full Marks : 60

Time : 3 hours

The figures in the margin indicate full marks for the questions

1. पूर्ण वाक्य में उत्तर दीजिए : 1×7=7

(क) शंकरदेव की काव्य-भाषा क्या है?

(ख) श्रीकृष्ण माँ से क्या शिकायत करता है?

(ग) मीराबाई किसकी अनन्य उपासिका है?

(घ) "पतियाँ मैं कैसे लिखूँ, लिख्योरी न जाय"—ऐसा कहने का क्या आशय है?

(ङ) 'प्रज्वलित बह्नि' कविता के कवि कौन हैं?

(च) कवि हरिवंश राय 'बच्चन' जी रचित पाठ्य कविता का नाम उल्लेख कीजिए।

(छ) विद्यापति रचित किसी एक काव्यकृति का नाम लिखिए।

2. अति संक्षिप्त उत्तर दीजिए : 2×4=8

(क) कबीरदास ने गुरु और गोविन्द में किन्हें बड़ा माना है और क्यों?

(ख) तुलसी के आराध्य राम के किस-किस ओर जानकी और लक्ष्मण शोभायमान हैं?

(ग) "सम्राट स्वयं प्राणेश, सचिव देवर है"—किसने, किससे और किस प्रसंग में ऐसा कहा?

(घ) "बीन भी हूँ मैं तुम्हारी रागिनी भी हूँ"—कवयित्री ने ऐसा क्यों कहा?

3. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 5×3=15

(क) शंकरदेव के पाठ्य बरगीतों में से प्रथम बरगीत का प्रतिपाद्य अपने शब्दों में प्रस्तुत कीजिए।

(ख) पठित पदों के आधार पर मीराबाई की भक्ति-भावना पर प्रकाश डालिए।

(ग) पुष्प की क्या अभिलाषा रही है? 'पुष्प की अभिलाषा' कविता के आधार पर लिखिए।

(घ) 'अशोक की चिन्ता' कविता के आधार पर अशोक के मन में उदित चिन्ताओं पर प्रकाश डालिए।

(ङ) 'पतझर' कविता के माध्यम से कवि क्या अभिव्यक्त करना चाहता है? स्पष्ट कीजिए।

4. 'तोड़ती पत्थर' कविता के आधार पर पत्थर तोड़ने वाली मजदूरिन का एक शब्दचित्र प्रस्तुत कीजिए। 10

अथवा

'आत्म-परिचय' कविता के आधार पर कवि ने अपना परिचय किस प्रकार प्रस्तुत किया है, लिखिए।

5. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की साहित्य साधना पर आलोकपात कीजिए। 10

अथवा

हिन्दी साहित्य को रामधारी सिंह 'दिनकर' की देन पर एक लेख लिखिए।

6. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10

(क) ऊधौ हरि काहे के अंतरजामी।
अजहुँ न आइ मिलत इहँ अवसर, अवधि बनावत लामी॥
अपनी चोप आइ उड़ि बैठत, अलि ज्यौं रस के कामी।
तिनको कौन परेखौ कीजौ, जे हैं गरुड़ के गामी॥
आई उधरि प्रीति कलई सी, जैसी खाटी आमी।
सूर इते पर अनखनि मरिअत, ऊधौ पीवत मामी॥

अथवा

(ख) कुछ देर जले यह दिया और,
गूँथू माला का एक छोर।
विस्मृति की आँधी! कर न शोर,
चंचलते! बहकाओ न मोर।
मेरे मन का गाकर मलार...
बह चली, आह! कैसी बयार!

★★★